आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 316 | ARYA SABHA MAURITIUS | *1st Sept. to 15th Sept. 2015*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

वेद की उत्पत्ति सृष्टि के आरम्भ से

ओ३म् तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे ।
धन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्माद जायत।।

यजुर्वेद ३१/७

L'ORIGINE DES VEDAS – DES LA CREATION DU MONDE

Om ! Tasmādhya-jyātasarvahutarichaha sāmāni jajiré.
Chandānsi jajiré tasmādhyajustasmāda jāyata.

Yajur Veda 31/7

Glossaire / Shabdārtha

He manushyo ! Tum ko chahiyé ki : O être humain ! Tu dois ……...……
Tasmāta – cet Etre parfait
Yajyāta – cet Etre très vénérable
Sarvahutaha – Tout le monde qualifie la création (l'univers / le monde) et la nature comme une forme de manifestation voire, l'incarnation de cet Etre Su+prême (Dieu)
Richacha – Rig Veda
Sāmāni – Sāma Veda
Yajuha – Yajur Veda
Jajire – Atharva Veda
Tasmāt – de ce Seigneur
Ajāyata – Il faut être reconnaissant envers le Seigneur de qui nous proviennent les Vedas et lui offrir sa vénération (prière) avec beaucoup de dévouement.

Interprétation / Anushilan

Ce verset du Yajur Veda se trouve aussi dans le "Purush Sukta" qui fait état, entre autres, de la genèse de la création du monde (l'univers) par l'être Suprême (Dieu).

L'œuvre du Seigneur, en ce qu'il s'agit de la création de l'univers est considéré dans les Vedas comme un exploit merveilleux, voire un grand sacrifice /un grand 'yajna' où il est le Prêtre officiant (Purohit). Comme oblations (āhutis) il offre la matière primordiale (le Prakriti) et son apport considérable.

C'est de ce grand sacrifice que s'est manifesté l'univers, en d'autres mots, les astres – le soleil, les étoiles, la lune, les planètes, les comètes, et ainsi de suite.

Dans ce même contexte, afin de rendre possible notre existence, ici-bas, le Seigneur a pourvu notre monde de la nature – la terre, le ciel, la mer, les montagnes, les vallées, les plaines, les plateaux, les rivières, les plantes, les animaux et les éléments essentiels tels que l'air, l'eau, le feu/l'énergie/l'électricité, l'espace, etc.

Pour mettre la dernière main afin de perfectionner sa merveilleuse création, le Seigneur, a transmis à l'humanité, pour son salut, les quatre Vedas qui englobent tout le savoir comme suit :-

(i) **Le Rig Veda** – Toute la connaissance du monde (Gyāna)
(ii) **Le Yajur Veda** – L'action (karma) que l'homme doit entreprendre afin de mener à bien sa vie sur la terre.
(iii) **L'Atharva Veda** – La science -- toutes les disciplines (Vigyan). Connaissance indispensable à l'homme durant toute sa vie.
(iv) **Le Sāma Veda** – La dévotion (Upāsnā) : la pratique de la spiritualité qui mène les fidèles vers le but ultime de la vie humaine sur la terre – Moksha.

La création dans son ensemble est aussi qualifiée comme l'incarnation ou la manifestation de l'Etre Suprême.

Dans ce verset, il nous est aussi fortement conseillé d'être toujours reconnaissant envers le Seigneur pour sa protection et sa bienveillance à notre égard et pour ce don inestimable – les Vedas – en lui offrant notre vénération avec beaucoup de piété.

N. Ghoorah

सत्यार्थप्रकाश एवं वेद-मास

डॉ० उदयनारायण गंगू, ओ.एस.के, आर्य रत्न - प्रधान आर्य सभा मॉरीशस

सन् १९९८ ई० में आर्यसभा ने महात्मा गांधी संस्थान के सभागार में मॉरीशस में सत्यार्थप्रकाश के आगमन का शती-समारोह एक तृदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के द्वारा बड़े ही उत्साहवर्धक वातावरण में मनाया था। इस महासम्मेलन के आयोजन में महात्मा गांधी संस्थान एवं भारतीय उच्चायोग ने अपने खर्च पर भारत से अनेक विद्वानों को निमन्त्रित किया था। उसी अवसर पर आर्यसभा ने जून मास को 'सत्यार्थप्रकाश मास' घोषित किया था। तब से अब तक जून मास के अन्तर्गत सत्यार्थप्रकाश के पठन-पाठन पर विशेष बल दिया गया है।

इसी प्रकार आर्यसभा ने 'श्रावण मास' को 'वेद-मास' घोषित किया। प्रसन्नता की बात है कि इस मास में यज्ञानुष्ठान, वेदाध्ययन तथा वेद-प्रवचनों से हमारा देश वेदमय हो जाता है । घर-घर, मंदिर-मंदिर वेद-मंत्रों की ध्वनि गूँज उठती है। अखिल मॉरीशस यज्ञमय हो उठता है। धार्मिक जन धार्मिक कृत्यों को सम्पन्न करने में तत्पर हो जाते हैं।

अक्तूबर मास से वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए हम एक और पग धरने जा रहे हैं।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

यशस्वी आर्य पुत्र

स्वर्गीय मोहनलाल मोहित जी *का जन्म २२ सितम्बर १९०२ ई० को मोका प्रान्त के लावेनीर गाँव में हुआ था। बचपन में उन्हें पाठशाला जाने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ था। सौभाग्य से ११ वर्ष की आयु में उन्हें किसी सज्जन से हिन्दी सीखने का भाग्य प्राप्त हुआ था। फिर वे स्वाध्यायशील किशोर धीरे-धीरे अनेक ग्रन्थों का अध्ययन करने लगे और अल्पकाल ही में उनका बौद्धिक विकास बड़ी तीव्रता के साथ होने लगा। उनकी बुद्धिमत्ता, धार्मिक निष्ठा, सामाजिक सेवा और दूरदर्शिता के कारण वे प्रसिद्धि प्राप्त करते गये। उनका नियन्त्रित, अनुशासित और आदर्श जीवन हमारे युवक-युवतियों के लिए प्रेरणादायक हैं।*

श्रद्धेय मोहित जी वैदिक-सिद्धान्त के अनुकूल जीने वाले एक कर्मठ आर्य पुत्र थे। वे आर्यसमाज के परम भक्त थे और एक बहुगुण सम्पन्न व्यक्ति थे। उनका व्यक्तित्व, शुद्धाचरण, निष्काम सेवा कार्य एवं निस्वार्थ सामाजिक उपकार बड़ा ही सराहणीय है। वैदिक-धर्म पर अटल विश्वास करना उनके प्रगतिशील जीवन का सजीव प्रतीक है। उनके आत्म विश्वास, उत्साह, साहस, धैर्य, चातुर्य आदि गुण हमारे लिए प्रभावोत्पादक हैं।

आर्य नेता मोहित जी एक ख्याति प्राप्त महापुरुष थे। वे एक बुद्धिजीवी प्राणी थे। एक प्रखर वक्ता, स्वाध्यायशील लेखक, धर्म प्रेमी, साहसी आर्य वीर थे। उनका सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज के आंदोलन कार्यों में समर्पित हो गया था। उनकी इतनी विशेषताएँ एक ही व्यक्ति में समाहित होना कोई सरल कार्य नहीं है। उनके तप, त्याग, पुरुषार्थ और विविध सद्गुणों से प्रभावित होकर हम जीने का संकल्प लेंगे तो मॉरीशस में आर्य समाज का भविष्य अवश्य उज्ज्वल होगा।

आर्य सपूत मोहित जी एक संस्कारी मानव थे। वे वैदिक-धर्म को अपने जीवन में धारण करते रहे। वेदों की सत्य विद्याएँ ग्रहण करके अपने जीवन को सफल बनाते रहे और मानवता के पुजारी बनकर सब का परोपकार करना अपना कर्त्तव्य समझते रहे। वे महर्षि दयानन्द की विचार-धारा को घर-घर पहुँचाने वाले महापुरुष थे। उनका समर्पित जीवन बड़ा ही शिक्षाप्रद है।

श्रीमान् मोहनलाल मोहित जी एक यशस्वी आर्य पुत्र थे। उनके सामाजिक सेवा कार्यों की प्रशंसा मॉरीशस के अलावा अन्य देशों में भी लोग करते हैं। इस देश में वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करना और मानव समाज को अज्ञान रूपी घोर अन्धकार से सत्य के प्रकाश में लाना उनका परम लक्ष्य था। मोहितजी एक संपत्तिशाली व्यक्ति थे, जीवन पर्यन्त वे भौतिक और आध्यात्मिक सुख का अनुभव करते रहे। १०३ वर्ष तक बड़े आनन्द पूर्वक जीवित रहना परमात्मा का बहुत बड़ा उपहार है। सचमुच उनका सम्पूर्ण जीवन उत्साह जनक है।

आगामी २२ सितम्बर को हम आर्य सभा के तत्वावधान एवं मोहनलाल मोहित फाउण्डेशन के सहयोग से स्वः मोहनलाल मोहित जी की ११३ वीं वर्षगाँठ आयोजित करने जा रहे हैं। जिस अवसर पर उनके जीवन पर आधारित श्री नरेन्द्र घूरा जी द्वारा लिखित एक पुस्तक का विमोचन किया जाएगा।

हमारी यही कामना है कि स्वर्गीय मोहनलाल मोहित जी के आदर्श जीवन से प्रेरित होकर हमारे युवक-युवतियाँ धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में अपना पूरा योगदान दें और अपने परोपकारी कार्यों से जीवन में यश कमाते हुए यशस्वी आर्य पुत्र बनें।

बालचन्द तानाकूर

अस्सी साल के हुए

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के,आर्य रत्न - उपप्रधान आर्य सभा मॉरीशस

स्वनाम धन्य डा० इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ का जन्म आज से ८० वर्ष पहले रिव्येर जी राँपार गाँव में ९ सितम्बर १९३५ को एक गरीब परिवार में हुआ था। प्राथमिक पढ़ाई के बाद माध्यमिक पढ़ाई न हो पायी क्योंकि पहले गाँवों में माध्यमिक विद्यालय नहीं था। १९६१ में रिव्येर जी राँपार में पहला कोलिज बना जिसका नाम था "Universal College"। २५ वर्ष की उम्र में कोलिज में दाखिल हुए और आगे चलकर केम्ब्रिज स्कूल सर्टीफिकेट (Cambridge School Certificate) में कई विषयों में सफलता पायी। उधर साथ ही साथ हिन्दी पढ़ते रहे और हिन्दी प्रचारिणी सभा द्वारा आयोजित 'प्रथमा' परीक्षा में भी उत्तीर्ण हुए। १९६२ में सरकारी पाठशाला में पढ़ाने लगे और १९६५ में ३३ वर्ष की सेवा के पश्चात् अवकाश ले लिया।

अपनी प्रगति के साथ हिन्दी की भी सेवा अभी तक कर रहे हैं। हिन्दी लेखक संघ के महामंत्री पद पर लम्बे समय तक रहे और आज कई वर्षों से मान्य प्रधान पद पर हैं।

हिन्दी लेखक संघ मे शुरू से ही स्वर्गीय डा० मुनीश्वरलाल चिन्तामणि और स्वं० पंडित धरमवीर घूरा के साहित्यिक सहयात्री रहे। आधी शताब्दी से अधिक समय तक हिन्दी लेखक संघ को पल्लवित-पुष्पित और फलदार बनाने में जितना योगदान इन्द्रनाथ का रहा शायद और किसी का न रहा। यहाँ तक कि आज हिन्दी लेखक संघ का नाम लेते हैं तो इन्द्रनाथ का नाम ज़ुबान पर आ जाता है।

इन्द्रनाथ का लगाव आर्य सभा से भी रहा है। रिव्येर जी राँपार आर्यसमाज के जन्मदाताओं में, इन्द्रनाथ का स्थान प्रमुख है। आर्य सभा मोरिशस के अन्तर्गत अनेक उपसमितियाँ हैं। वे विद्या समिति और आर्योदय प्रकाशन समिति में वर्षों से सक्रिय रहे हैं। समितियों में विभिन्न पद सम्भाले। कभी मंत्री तो कभी साधारण सदस्य। आर्योंदय के लिए हिन्दी, अंग्रेज़ी और फ्रेञ्च में लेख देते आये हैं। आर्योदय के सह-सम्पादक पद पर भी रहे। आर्यसभा द्वारा संचालित सायंकालीन पाठशालाओं का निरीक्षण और परीक्षण भी लम्बे समय से करते आ रहे हैं। इन्द्रनाथ जी आर्यसमाज की ओर से जो भी कार्यकलाप होते हैं वहाँ निश्चय रूप से वे उपस्थित होकर न केवल सहयोग व सहायता पहुँचाते हैं बल्कि कार्यभार भी सम्भालते हैं। जब मोरिशस में आर्यसभा ने आर्यज़िला परिषद् बनाना निश्चय किया तो रिव्येर जी राँपार कैसे पीछे रहता। वहाँ भी ज़िला परिषद् की स्थापना हुई तो इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ ने आगे आकर अपनी सक्रियता बनाते हुए विभिन्न पदों पर रहे और आज उसी परिषद् के मान्यप्रधान हैं ।

इन सब सामाजिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों के सिवा आप एक विश्वाविख्यात साहित्यकार भी हैं। अभी तक आपकी १२ पुस्तकें प्रकाश में आ चुकी हैं। इन दर्जन पुस्तकों में 'आर्यसमाज और हिन्दी विश्व संदर्भ में' आर्य वांगमय के अद्वितीय महाग्रन्थ हैं जिसमें दुनिया के सभी देशों के आर्य समाजों का विशद इतिहास लिखा गया है। आर्यसमाज के प्रारम्भिक काल के महान् पं० काशीनाथ किस्तो की जीवनी भी प्रकाशित की है। इन दोनों पूर्व उल्लिखित ग्रन्थों की प्रस्तावना लिखने वाले खुद के लेखक हैं। विदेशों में 'हिन्दी में गागर में सागर' हाईकु महाकाव्य है जिसमें २,२४४ हायकु (कविताएँ) छपी हैं। आर्योदय में इनके लिखे हिन्दी अंग्रेज़ी और फ्रेंच में लेख पिछले ५० वर्षों से छपते आ रहे हैं। तीनों भाषाओं बिरले ही कोई लेख लिखता है। पं० विष्णुदयाल लिखते थे। वे तो संस्कृत में भी लिखते थे।

इन सब साहित्यिक कृतियों के लिए विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ भागलपुर,'अभ्युदय संस्था', वर्धा तथा 'हिन्दी वांग्मय पीठ' कोलकाता से आपको डोकटोरेट, 'विश्व हिन्दी शिरोमणि सारस्वत' सम्मान मिले हैं। इसके अलावा उनकी निस्वार्थ सामाजिक सेवा के लिए मोरिशस की सरकार ने भी आपको सम्मानित किया है।

उनके ८० वीं जन्मदिन पर मेरी ओर से आर्योदय के समस्त पाठकों की ओर से जन्मदिन का हार्दिक अभिनन्दन।

HEALTH DAY

BE HEALTHY AND LIVE SAFELY

GRAND BOIS ARYA SAMAJ

in collaboration with

Savanne District Council

BLOOD DONATION AND FREE MEDICAL CHECK UP

Date : Sunday 13th September 2015.
Venue : Grand Bois Arya Samaj.
Time : 7.00 a.m to 1.00 p.m.

- FREE TEST & FREE MEDICAL CHECK UP
- BLOOD DONATION
- B.P. TEST (for all persons)
- BLOOD TEST
- EYE SCREENING - by Agarwal Clinic
- H.I.V TEST
- BONES TEST – by Anlene

Public are invited to take advantage and benefits.

पृष्ठ १ का शेष भाग

डिप्लोमा स्तर पर दो परीक्षाओं की पढ़ाई होने जा रही है। एक 'सत्यार्थप्रकाश-परीक्षा' और दूसरी 'पंचमहायज्ञ-परीक्षा'। इन परीक्षाओं में सभी उम्र के लोग भाग ले सकेंगे। बर्शते वे एस०सी०, प्रथमा अथवा किसी धार्मिक परीक्षा में कोई प्रमाणपत्र प्राप्त कर चुके हों।

पाई में स्थित डी०ए०वी० डिग्री कॉलिज (वर्तमान में 'ऋषि दयानन्द संस्थान') सन् २००७ से तृतीयक शिक्षा का प्रचार करता रहा है। इस संस्थान द्वारा सैकड़ों छात्र-छात्राओं ने कई विषयों में बी०ए० और एम०ए० की डिग्री प्राप्त की है। यही संस्थान सत्यार्थप्रकाश एवं पंचमहायज्ञ परीक्षा का केन्द्र होगा।

हमें पूर्णाशा है कि इच्छुक जन इन परीक्षाओं की तैयारी करेंगे। इस पढ़ाई से उन्हें सत्यार्थप्रकाश का ज्ञान तथा पंचमहायज्ञों में संकलित वैदिक मन्त्रों का अर्थ-ज्ञान होगा।

सूचना

इच्छुक जनों की सेवा में सूचित हो कि अक्तूबर मास के प्रति शनिवार को प्रातःकाल नौ बजे से ऋषि दयानन्द संस्थान, पाई में डिप्लोमा स्तर पर निम्नलिखित दो परीक्षाओं की पढ़ाई शुरू होने जा रही है :-

(१) सत्यार्थप्रकाश-परीक्षा
(२) पंचमहायज्ञ-परीक्षा

एस०सी० अथवा प्रथमा, सिद्धान्त शास्त्री वा विद्या वाचस्पति परीक्षा में उत्तीर्ण व्यक्ति इन परीक्षाओं के लिए निम्न पते पर अपना आवेदन-पत्र भेज सकते हैं :-

The Secretary, Rishi Dayanand Institute, M2 Lane, Avenue Michael Leal, Pailles

OR

The Secretary, Arya Sabha Mauritius, 1, Maharshi Dayanand Street, Port Louis

युवा जीवन और मद्य-सेवन

रामझीतन करिश्मा

मानव जीवन में युवावस्था सबसे सुनहरा पल होती है। अपनी कल्पना शक्ति और शारीरिक बल से युवा समाज को उन्नति के पथ पर अग्रसर करता है। सात्विक प्रवृत्तियों को अपना कर युवा पीढ़ी अच्छा नागरिक बनती है। दुर्भाग्यवश हमारे युवक-गण तात्कालीन समाज में तामसिक प्रवृत्तियों को अपना रहे हैं, मद्यपान ऐसी ही एक बुराई है । युवकों के मध्य मद्यपान का सेवन सुरसा की भाँति बढ़ती जा रही है।

इस बाह्म आडम्बर से भरे संसार में युवा-गण मुख्यतः मद्य-सेवन से प्रभावित होते हैं। जब रात दिन दूरदर्शन पर मदिरा, धूम्रपान आदि का विज्ञापन ज़ोर-शोर से होता है तब युवा पीढ़ी इन चीज़ों को अपनाने के लिए लालायित होती है। कभी-कभी इन विज्ञापनों में अभिनेता, क्रिकेटर, प्रचलित खिलाड़ियों को मद्य-सेवन करते हुए दिखाते हैं। अपनी अपरिपक्वता में कई युवक व युवतियाँ इन्हें अपने 'रोल-मॉडल' के रूप मे अपना लेते हैं। वे सोचते हैं कि मदिरापान व धूमपान करने से वे अत्यधिक प्रसिद्ध बन जायेंगे। लड़के व लड़कियाँ अपने आप को आत्मनिर्भर व स्वतंत्र दिखाने के लिए ऐसा करते हैं। कैसी विडम्बना है कि जो एक बार मद्य-सेवन के जाल में फँस जाता है तो वह इससे बाहर नहीं निकल पाता है।

कहावत है कि बालक की शिक्षा घर से प्रारम्भ होती है। अभिभावक अपनी संतानों के प्रथम गुरु कहलाते हैं, कितने खेद की बात है जहाँ माता-पिता को युवकों को सत्मार्ग एवं सत्कर्म की ओर प्रेरित करना चाहिए था, वे ही अभिभावक किसी भी पारिवारिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक अवसर पर ग्लास के ग्लास मदिरा पान करके खुशियाँ मनाते हैं। निस्संदेह युवा पीढ़ी अपने अभिभावकों के पद-चिह्नों पर ही चलेंगे ! और एक बार इस दलदल में फँसे तो बहार निकलना कठिन है। कहने का भाव यह है कि किसी ने किसी रूप में माता-पिता और समाज अपने कर्तव्यों से मुँह फेर रहे हैं। कहीं न कहीं समाज परोक्ष रूप से मद्य-सेवन को बढ़ाने में उत्तरदायी है। जब हर गाँव, हर शहर और हर गली में शराब और सिगरेट बिकते हैं, तो भला युवक क्या करेगा? मन बहलाव के लिए वह इन कुरीतियों को ही अपनाएगा। कौन दोषी है? सरकार! क्योंकि वही तो शराबखाने और शराब बेचने के 'परमिट' देने के लिए ज़िम्मेदार है?

वस्तुतः युवक व्यक्तिगत रूप से भी दोषी होता है । उसे पता होना चाहिए कि मद्य-सेवन उस पिशाच की तरह है जो एक बार पीछे पड़ जाए तो पीछा नहीं छोड़ता। कुमित्रों की संगती में पड़कर सिगरेट की पहली फूंक ली जाती है तथा शराब का एक घूंट पिया जाता है। शनै-शनै इस चुंगल में युवक फँस जाते हैं । महाभारत में मदिरा पान के विरोध में लिखा गया है :

'शराब पीकर लोग आपस में पागलों की तरह लड़ते हैं, कुछ लड़खड़ाते हैं, कुछ अनुचित बातें करते हैं, कुछ विक्षिप्त से हो जाने के कारण नग्न हो जाते हैं । जो इस पेय का सेवन करते हैं, वे पापी हैं।'

यद्यपि शराब और धूम्रपान के नकारात्मक पक्षों से लोग परिचित होते हैं फिर भी कई युवक-गण विद्यालयों से भागकर कुसंगति में पड़कर कभी नदी किनारे तो कभी समुद्र तट पर मद्य-सेवन करते हैं। शराब समाज में इस प्रकार फैलता जा रहा है कि बड़े से लेकर बूढ़े तक सभी इसकी लपेट में आ गए हैं। शराब पीकर युवा पीढ़ी प्रायः पारिवारिक कलह का कारण बनती है। जब जवान लड़का घर में पीकर आता है तब माता-पिता के बीच तू-तू मैं-मैं होती है। घर का सुख-चैन मिट जाता है। इसी प्रकार युवक-गण मद्य-सेवन के कारण अपनी पढ़ाई सही रूप से नहीं कर पाते हैं और कभी कभी उन्हें बीच में ही अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ती है। असफलता के कारण युवकों का भविष्य विनाशकारी रूप धारण कर लेता है।

मदिरा-पान केवल लड़कों को ही प्रभावित नहीं करती अपितु आजकल युवतियाँ भी शराब पीती हैं। मदिरा के वश में अपने शरीर पर नियंत्रण नहीं रख पाती हैं और उनके साथ तो कभी-कभी बलात्कार हो जाता है। कभी-कभी से स्वयं स्वीकृति से अपनी लाज खो देती हैं। निस्संदेह कहीं न कहीं किशोर गर्भपात के पीछे शराब उत्तरदायी है। **क्रमशः**

Elocution Contest : The Relevancy of Satyartha Prakash
'सत्यार्थप्रकाश की प्रासंगिकता'

आधुनिक काल में सत्यार्थप्रकाश की महिमा एवं गरिमा अद्वितीय है। इस महान् ग्रन्थ के ज्ञान का प्रकाश स्वामी दयानन्द सरस्वती ने फैलाया और आज भी यह ग्रन्थ इतना प्रभावशाली है कि विश्व में इसका अनुवाद अब तक बाईस भाषाओं में हो चुका है। हिन्दू जाति के लिए वेदों का ज्ञान रखनेवाला यह 'मशाल ग्रन्थ' चिरकाल तक प्रज्ज्वलित रहेगा।

सत्यार्थप्रकाश का अर्थ है, सत्य की ओर उन्मुख होना, जिसके लिए जीवन में आध्यात्मिक ज्ञान एवं संयम की आवश्यकता है। आज हमारे समाज में भौतिकवाद से लोग इतने प्रभावित है कि नास्तिकता में ही सरल जीवन-शैली का उपाय ढूँढ़ते हैं तथा विभिन्न प्रलोभनों में पड़कर, धर्म-परिवर्तन कर रहे हैं। यह इसीलिए होता है क्योंकि वे उस परम सत्य के अस्तित्व से अनभिज्ञ है।

इसी कारण सत्यार्थप्रकाश वह 'दीप ग्रन्थ' है जिसे खोलते ही ईश्वर के सच्चे स्वरूप का परिचय मिलता है। सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में कहा गया है कि ईश्वर एक है। वह सर्वव्यापी, सर्वज्ञानी, एवं सर्वशक्तिमान है तथा उनका सर्वश्रेष्ठ नाम 'ओ३म्' है।

उसी प्रकार से सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय एवं तृतीय समुल्लास में बच्चों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास तथा चरित्र-निर्माण में माता-पिता और गुरु की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया गया ।

मातृमान, पितृमान, आचार्यवान पुरुषो वेद।

यह बात सत्य है क्योंकि, जो माता-पिता एवं गुरु की छाया में बड़ा होता है, उसका भविष्य उज्ज्वल होता है। परन्तु आज परिवार में, पति-पत्नी के झगड़े के कारण बढ़ते पारिवारिक तनाव, तलाक की संख्या, स्त्री-पुरुष के अनैतिक संबंधों के दुष्प्रभाव से बच्चे बच नहीं पा रहे हैं ।

अतः सत्यार्थप्रकाश एक परिष्कार-गन्थ है। इसमें विविध संस्कारों से हमारा शरीर और मन दोनों परिष्कृत होते हैं। परन्तु आज की नई-पीढ़ी, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन नहीं कर रही है। छोटी उम्र में यौन-संबंधों में जुड़कर समाज में लड़कियाँ अविवाहित माँ बन रही हैं। जबकि सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ में वर्णित चारों आश्रमों एवं सोलह संस्कारों का पालन करने से इन समस्याओं का निदान संभव है। तन के लिए सात्विक भोजन तथा मन की शुद्धि के लिए मंत्रोपासना की शिक्षा प्रासंगिक है।

मैं आपसे प्रश्न करती हूँ : आज किस व्यक्ति को सत्ता प्यारी नहीं ? अपने ईशारे पर हम दुनिया को नचाना चाहते हैं। पर अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए तो स्वामीजी ने स्वदेशी आन्दोलन नहीं किया था। सत्यार्थप्रकाश ऐसे ही कुशासकों को जड़ से उखाड़कर फेंकने का संदेश देता है तथा समाज में उचित परिवर्तन लाने के लिए हमें प्रेरित करता है। हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि मोरिशसवासियों ने पिछले आम चुनावों में उचित शासक का चयन करके इस उपदेश को समय-समय पर प्रमाणित किया है।

अन्त में यह कहना उचित होगा :-

'सत्यार्थप्रकाश ज्ञान की ऐसी है खान
जिससे आज भी लोग है अनजान
लेकिन जिसने दिया है इस ग्रन्थ को मान
उसका सदैव हुआ कल्याण
प्यारे सज्जनो, मान लो मेरी यह बात
करते रहो सत्यार्थप्रकाश के ज्ञान का व्याख्यान
बार-बार बना यह ग्रन्थ हिन्दू जाति की शान
इसका हर उपदेश कभी न होते-पुरान ।

डी.ए.वी कालिज मोरसेल्माँ की गतिविधियाँ २०१५

यह गर्व की बात है कि इस वर्ष हमारे छात्रों ने पहली बार के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कला एवं संस्कृति मंत्रालय द्वारा आयोजित हिन्दी नाटक प्रतियोगिता २०१५ में भाग लिया। नाटकीय मंचन के लिए मंत्रालय के अधिकारियों द्वारा शिक्षकों एवं छात्रों को कॉलिज में ही विशेष प्रशिक्षण दिया गया जिससे प्रतिभागी-टोली को ज्ञानवर्द्धक एवं सुखद अनुभव प्राप्त हुआ।

प्रस्तुत नाटक का शीर्षक 'हमारा स्वास्थ्य' था जिसका उद्देश्य चिकुनगुन्या, मधुमेह, हृदयरोग, मोटापा, रक्तचाप, चक्षु-रोगों आदि के कारणों एवं संभावित निदानों को बताते हुए एक स्वस्थ एवं नीरोग समाज का निर्माण करना है। साथी ही, सात्विक एवं संतुलित भोजन के महत्व पर प्रकाश डालिए 'जैसा अन्न, वैसा मन' उक्ति पर मनन करने का संदेश दिया गया।

नाटक का शीर्षक - हमारा स्वास्थ्य
संचालन कर्ता - श्रीमान् कमलेश रमावता
निर्देशिका - श्रीमती मनीषा हरनोम
नाटककार - रूमीला जानकी
छात्रों के नाम - रोलिशा रामदिन, केमलता सुखलाल, शायामालिया, अभिलाष, कमल अजोधा, (फोर्म ४ के छात्र) प्राकृतिश चत्तू, शंकर तोषण, विदूषी तिलक, येश्ना रामचर्ण ।

यह ध्यातव्य है कि नाटक प्रतियोगिता के प्रत्येक प्रतिभागी को हिन्दी विभाग की ओर से ट्रॉफ़ी भेंट की गई।

हिन्दी विभाग
डी.ए.वी कॉलिज, मोर सेल्माँ

आर्य सभा मोरिशस के तत्वावधान में मोरिशस आर्य युवक संघ द्वारा सें प्येर ग्राम में राष्ट्रीय आर्य युवा दिवस की तेईसवीं एवं भारत की स्वतंत्रता की अड़सठवीं वर्षगाँठ भव्य रूप से मनायी गयी। इस अवसर पर निबन्ध-लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम स्थान पर आनेवाले डी.ए.वी मोरसेल्माँ के इन छात्रों को पुरस्कृत किया गया : चित्रा बिकुरी, बंदिनी लोलुआ, विनुषा भूदोय और प्रियक्षा रामजीतन। साथ ही वाक् - प्रतियोगिता के लिए प्रथम पुरस्कार एच.एस.सी की छात्रा चित्राक्षी मूरत को मिला। इन छात्रों ने डी.ए.वी. कॉलिज मोरसेल्माँ की प्रतिष्ठा बढ़ा दी है।

एस.सी. एवं एच.एस.सी के छात्रों की परीक्षा को सुनियमित एवं सुनियोजित रूप से तैयार करने की दृष्टि से इस वर्ष 'साप्ताहिक पुरस्कार वितरण समारोह' आयोजित किया गया। सन् २०१४ की परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कृत किया गया। हालाँकि समारोह लघु स्तर पर आयोजित हुआ, फिर भी मेधावी छात्रों को संतुष्टि प्राप्त हुई तथा अन्य छात्रों को बेहतर नतीजे प्राप्त करने की प्रेरणा दी गई।

ऋषि दयानन्द की कही पर एक छोटा गीत

रामावाध राम

सुनो, सुनो ए दुनिया वालो ऋषि दयानन्द की अमर कहानी,
वो तो इतने पूज्य है, जितनी चारों वेद की वाणी (टेक)
भारत-वर्ष गुजरात प्रांत में एक शिशु जन्म लिया,
माता-पिता मूलशंकर नाम से बचपन का नाम दिया,
बचपन खेले जैसे बाग में फूल खिला,
माली का वह सुन्दर फूल बाज़ार में बिक गया ।
सुनो, सुनो.....

१३ वर्ष की आयु में मानो वे संन्यास लिया,
घर-द्वार सब छोड़कर सत्य की खोज में चल पड़ा,
कहीं भी सच्चा गुरु न मिलने पर निराश हुआ,
हार न माना, साहस से आगे ही बढ़ता गया,
आखिर एक दिन सूर्य की कीरण सा चमक उठा,
विरजानन्द स्वामी का दरबार को ठोंक दिया,
स्वामी जी ने अन्दर से पूछा कौन आया,
मूलशंकर जी ने जवाब, यही जानने को मैं आया,
विरजानन्द जी जान गया ये सच्चा भक्त विद्या का
जैसे सोना को सुनार परख लिया ।

आँख के अँधे विरजानन्द ने दयानन्द को आँख दी,
खूब पढ़कर गुरु जी दक्षिणा देना चाहा
गुरू ने कहा अभी भारत अंधकार में है, जाओ सब के दीप जल।
सुनो, सुनो.....

दयानन्द पलभर के नहीं विश्राम लिया,
शास्त्रार्थ से पाखण्डियों को यह तो जवाब दिया,
ईश्वर तो अपने दिल में, पत्थर में क्यों ढूंढ़ रहा
आखिर वो दिन आया जब अंध-विश्वास मिटा दिया।
१८७५ में आर्यसमाज मुम्बई में बनाया,
सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् को लिख गया,
अब जनता की नींद टूटी, वे स्वामी जी जान गया।
सुनो, सुनो .....

सच्चा काम के पीछे, हरदम शत्रुओं ने जाग उठा,
कई बार स्वामी जी के प्राण लेने पर तुला,
एक नहीं, दो नहीं, अठारह बार उनको ज़हर दिया,
आखिर एक दिन स्वामी जी की जान लेकर दम लिया ।
स्वामी जी ८ दिन तक प्राण को अपने वश में किया ।
अन्त समय आया स्वामी जी ने खिड़की को खुलवा दिया ।

ओ३म् जाप करो और मुझको जग से छुड़ाया,
जाओ स्वामी-जाओ स्वामी अमर रहेगा नाम तुम्हारा,
जब-तक चमके चाँद-सितारे चमके का तुम्हारा,
स्वामी तुम अपने दीप बुझाकर,
सबका दीप जलाया,
जय स्वामी दयानन्द की
बोल सब जब जय दयानन्द
जय-स्वामी जय - ३

धन्यवाद समर्पण

१२.०४.२०१५ की तारीख थी और दिन रविवार का। यह दिन मेरे जीवनकाल का एक विशेष दिन था। क्योंकि अपने जीवनकाल में प्रथम वार इस प्रकार की सामग्री लेकर समाज के समक्ष आयी थी। उस दिन मेरी प्रथम रचना।

'मेरा जीवन और मेरा भरा पूरा परिवार' का लोकार्पण समारोह पूर्वक मनाया गया था। यह कार्यक्रम इन्द्रधनुष सांस्कृतिक परिषद्, आर्य सभा मोरिशस एवं प्लेन विलियेम्स आर्य ज़िला परिषद् के मिले जुले सहयोग से सम्पन्न हुआ था। निर्गिन भवन के प्रांगण में जब मैं अपनी गाड़ी से उतरी तो अपने तीन गुरुवरों से मिलकर फूली न समाई। वे थे परम पूज्य श्री डॉक्टर जगासिहं जी, डा० अंचराज जी, श्रीमान् सत्यदेव प्रीतम जी। अपने सभी गुरुवरों एवं संस्थाओं को मैं सदैव आभारी रहूँगी ।

पुस्तक लोकार्पण समारोह वेद मन्त्रों के उच्चारण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ आरम्भ हुआ। उस सभागार में अनेक ऊँच कोटि के विद्वान् एवं विदुषीगण की उपस्थिति थी। जिनमें गुरुवर श्रीमान् प्रह्लाद रामशरण जी, डा० उदयनारायण गंगू जी, डा० नीऊर जी, श्री एस.के. कुलकरनी जी, श्री मुखलाल लोकमान जी एवं श्रीमती नूतन पाण्डे जी, डा० श्रीमती सरिता बुधू जी, श्रीमती धनवन्ती रामचरण जी आदि। श्रद्धेय श्रीमान् हरिदेव रामधनी जी ने उस दिन का कार्यभार सम्भाला । बारी-बारी से अनेक विद्वानों एवं विदुषियों का भाषण हुआ। लगता था कि मैं उन विद्वानों के मध्य में मैं महासागर के तट पर सिर्फ़ एक बूँद समान हूँ।

इस सुनहरे मौक़े पर अनेक हित-मित्र, परिवारों एवं रिश्तेदारों ने अपनी उपस्थिति दी थी। उपस्थित सभी लोगों को हृदय की गहराई से धन्यवाद समर्पित करती हूँ।

प्रियंवदा जीबन,आर्य भूषण

23rd Arya Yuva Diwas and 68th Independence Anniversary of India

Dharamveer Gangoo, President Mauritius Arya Yuvak Sangh

The Mauritius Arya Yuvak Sangh celebrated the 23rd Arya Yuva Divas and 68th Independence Anniversary of India at Ramawatar Mohit Hall, L'Agrement, St. Pierre on Saturday 15th August at 1.00 p.m.

Eminent personalities graced the function by their remarkable presence

The Minister of Education & Human Resources, Tertiary Education & Scientific Research, Hon. Mrs Leela Devi Dookhun, Minister of Youth and Sports, Mr Yogida Sawmynaden , H.E Shri Anup Kumar Mudgal, High Commissioner of India, Yogacharya Dr Vinod Kumar Sharma, Acharya Jitendra Purusharthi and many other eminent personalities graced the function by their remarkable presence. Youths in great numbers from every nook and corner came with great zeal and enthusiasm to attend and participate in several colourful programmes of the day.

Youths from different corners of Mauritius

The ceremony started with

Lighting of Lamp

Mantra Path and lighting of lamp, followed by a devotional song by the B.A (Hons) Hindi students of Rishi Dayanand Instititute, Pailles. Yuvaks and Yuvatis participated in various programmes such as Yoga demonstration, Bhajans, Poem recitation, Story telling, Speech to name but a few.

The President of Mauritius Arya Yuvak Sangh, Shri Dharamveer Gangoo

The President of Mauritius Arya Yuvak Sangh, Shri Dharamveer Gangoo, welcomed all and expressed his gratitude to each and every one to make the event successful. During his address, he made a humble request to youngsters in particular, to draw inspiration from freedom fighters of India who fought to make India independent. Mauritius, too, inspired by the greatest democracy of the world, got its Independence. Distinguished guests who addressed the gathering laid stress on Youth involvement in social activities.

Finally, the chief guest, as well as other special guests proceeded with the launching of the E – Newsletter of Mauritius Arya Yuvak Sangh which bears the name 'Arya Yuva'. (It is to be noted that the E-Newsletter has been made (from designing to editing) by the wonderful and dynamic team of Mauritius Arya Yuvak Sangh.) The E – Newsletter will be posted on the website of Arya Sabha every month.

Launching of Arya Yuva E-Patrika

Masters of ceremony

The two masters of ceremony Miss Karishma (Diya) Ramjheetun and Mr Pravin Boodhun as well as the dedicated team of Mauritius Arya Yuvak Sangh did a marvelous task. All these would not have been possible without the support of Arya Sabha. The programme ended with the distribution of prizes to Yuvaks and Yuvatis who participated in different competitions organized by Mauritius Arya Yuvak Sangh.

Prizes to participants & winners

Mauritius Arya Yuvak Sangh Team

RAKSHA BANDHAN - THE EVERLASTING AND PERENNIAL FESTIVAL OF BROTHERS & SISTERS

Sookraj Bissessur (B.A. Hons)

"Honesty, Modesty, Truth and Sincerity of purpose always bind Relationship"

Maharshi Dayanand Saraswatee

The Festival of Raksha Bandhan is celebrated in India, Mauritius and all parts of the world with considerable love, immense gusto, wide sense of elation and profound affection.

Raksha Bandhan is a festival of brothers and sisters. On Saturday (August 26), sisters and brothers are going to celebrate this important festival all over the world. Special importance is being attached to this festival because it entirely deals with the everlasting, perennial, sacred and sincere love – which exists between sisters and brothers.

'Rakhi' this piece of colorful thread which is being tied by the tender sister in her brother's wrist, eventually strengthens the bond of love and affection which exists between them. After the 'Rakhi' has been attached, the brother offers his sister gifts, pledges to protect her and gives divine compliments to her so that she may always live in peace, comfort and happiness. The sister in return prays to the Almighty and asks (Him) to clear all hurdles, impediments, trouble(s) and adverse circumstances and situation(s) that may come across her brother's life.

In the same line of thought and culture, it should be also seriously noted that this very thread is of special significance, and its values are greatly precious and also inestimable. Raksha Bandhan may even bring together siblings that had since long been kept aloof and fallen apart. As a matter of fact, Raksha Bandhan has also a direct divine and spiritual link with the 'Shrawani Utsav/Festival' and is usually regarded as a festival of the educated. Prior to the celebration of Raksha Bandhan, the beautiful and colourful threads are being exhibited and sold in the markets.

Brahmins would carry the threads to the Hindu families of their acquaintance and tie them round the wrists of every member of the family, and in return the Brahmins would receive cash rewards. This 'Shrawani Parva' is also celebrated in Mauritius.

Indian history also indicates that in early days, 'Rakhis' were not only tied by Hindu sisters and brothers but, Hindu women too had tied 'Rakhis' round the wrists of several Muslim brothers owing to their fidelity, faithfulness, generosity and loyalty, which the latter had shown by struggling, grappling and combating for the general welfare and safeguard of thousand(s) and million(s) of Indians in India.

In short, the ultimate importance of this festival resides in the fact that when sisters face problems, pain and trouble(s) etc., it's at this appropriate moment that brothers consider it their bounden and sacred duty to help, support and protect their sisters so as to provide them with the essential and required love, solace, comfort and happiness of life.

Vedas and Vedanta, Concepts and Misunderstandings

Prof. Soodursun Jugessur, (Dharma Bhushan, Arya Bhushan)

cont. from last issue

2. Influence of Buddhism on Vedanta

Vedanta that developed as the exposition of Uttara Mimamsa, was strongly influenced by Mahayana Buddhism that preached that life is full of suffering and not worth living, and that the only way out of this world of suffering is to kill our desires and achieve 'Nirvana'. **Gaudapada**, in the sixth century A.D., who is the first philosopher to propound the **Advaita** doctrine of Vedanta, and who was the Guru of Govinda, who himself was the Guru of the great **Adi Shankara** who came in the eighth century A.D., believed that the world is not a reality and that it is an illusion that disappears only with 'Jnyana'.

In his **Maadhyamika-Karika**(i), Gaudapada says :

'From the ultimate standpoint, there is neither death nor birth, neither disappearance nor appearance, neither destruction nor production, neither bondage nor liberation; there is none who works for freedom, none who desires salvation, and none who has been liberated; there is neither the aspirant nor the emancipated—this is the highest truth.'

It is left to us now to interpret this in the context of our development and infer about what Vedanta's impact has been on the minds of people! What can happen to a society that subscribes to such belief impregnated with an attitude that **smacks of indifference**? Worse, what can happen if such a philosophy is taught amongst the younger generation struggling to improve their lot in this competitive world ?

In Part 2 to follow in next number of Aryodaye I will speak on Dwaita, Advaita and Vashist Advaita.

(i) Madhyamika Karika: 11.32, Op.cit.

to be continued.....

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 243-1025, Fax : 243-8576

आर्य सभा मॉरीशस
परीक्षा बोर्ड
सूचना

आर्य सभा द्वारा आयोजित धार्मिक परीक्षाओं के छात्र-छात्राओं को सूचित किया जाता है कि धर्म प्रवेश तथा धर्म रत्न की परीक्षाएँ प्रातः ९.०० बजे शनिवार १९ सितम्बर २०१५ को इन केन्द्रों में ली जा रही हैं ।

(१) डी.ए.वी. कॉलिज Morc. St. Andre
(२) लावाँचीर आर्यन वैदिक स्कूल
(३) वैदिक केन्द्र, युन्यन वेल
(४) वाक्वा आर्यन वैदिक स्कूल

यथा शीघ्र छात्रों को क्रम संख्या भेजी जा रही है।

डॉ० ज. लालबिहारी — *प्रधान*
श्री द. सिबालक — *मन्त्री*